B-4
L-19
MH

प्रशासनिक कारण

- ब्रिटिश प्रशासनिक ढाँचे में उच्च पदो से भारतीयों को अलग रखा गया।
- निचले स्तर पर भारतीयों की नियुक्ति होती थी कम वेतन मिलते थे तथा ब्रिटिश अधिकारी दुर्व्यहार भी करते थे।
- अंग्रेजो की नस्लीय नीति से अधिकांशतः भारतीयों में असंतोष था।

सामाजिक कारण :-

- अंग्रेजों के द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए कुछ कानून बनाए गए जैसे सतीप्रथा, विधवा पुनर्विवाह आदि।
- इसके साथ-साथ सरकार के द्वारा महिला शिक्षा का समर्थन किया गया। इन नीतियों से रूढ़िवादी भारतीयों में असंतोष था और वे इसे सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप के रूप में देखते हैं।

धार्मिक कारण -

- ईसाई मिशनरियों के द्वारा शैक्षणिक एवं प्रशासनिक संस्थाओं में धर्म का प्रचार करना, धर्मान्तरण के द्वारा इनके लिए प्रयास करना और सरकार के द्वारा इन्हें समर्थन दिए जाने से भी रूढ़ीवादी भारतीय नाराज थे। 1850 में धार्मिक निर्योग्यता कानून के द्वारा यह प्रावधान किया गया कि ईसाई धर्म अपनाने पर भी लोगों को पैतृकसम्पत्ति में अधिकार मिलेगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• इससे भी लोगों का असंतोष बढ़ा।

सैनिक कारण :-

• प्रारम्भ से ही भारतीय ब्रिटिश सेना में असंतोष के स्वर दिखाई पड़ते हैं जैसे 1806 में वेल्लोर में विद्रोह, 1824 बैरकपुर में विद्रोह इत्यादि

• असंतोष के कई कारण थे जैसे- कम वेतन, जातीय एवं धार्मिक प्रतीकों पर प्रतिबंध, ब्रिटिश अधिकारियों के द्वारा अमानवीय व्यवहार इत्यादि।

• 1854 में सैनिकों को निःशुल्क डाक की सुविधा समाप्त कर दी गयी तथा 1856 में सामान्य भर्ती अधिनियम (कैनिंग) के द्वारा यह अनिवार्य कर दिया गया कि सैनिकों को समुद्र पार जाकर सैन्य सेवा देनी होगी। अवध के विलय से बंगाल की सेना में अवध के सैनिकों की क्षेत्रीय निष्ठा आहत हुई।

तात्कालिक कारण

उपरोक्त पृष्ठभूमि में चर्बी वाले कारतूस के मुद्दे ने सैनिकों के असंतोष को भड़काया और यह विद्रोह का तात्कालिक कारण बना।

नोट :-

• सेना में एनफील्ड नामक एक नए राइफल को शामिल किया गया था जिसमें इस कारतूस का प्रयोग किया जाता था।

• मार्च, 1857 पर बैरकपुर में मंगल पाण्डेय ने विद्रोह किया था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- इसी मुद्दे को लेकर अप्रैल, 1857 में मेरठ में सैनिकों का विद्रोह।
- 10 मई 1857 को सैनिकों को छुड़ाने के लिए मेरठ में पुनः विद्रोह और विद्रोही सैनिकों ने दिल्ली पहुँच कर बहादुर शाह जफ़र को नेता घोषित किया

1857 से संबंधित तत्त :

विद्रोह के केन्द्र	नेता	सेनापति
दिल्ली	• बहादुर शाह जफर (सम्पूर्ण विद्रोह के नेता) • बहादुर शाह पर लाल किले पर मुकदमा चलाया गया और इन्हे रंगून निर्वासित किया गया • बख्त खाँ के नेतृत्व में विद्रोह के संचालन के लिए एक सदस्यीय समिति बनाई गई थी	कैम्पबेल
कानपुर	नाना साहेब - सहयोगी - अजीमुल्ला तात्या टोपे	कैंपबेल
लखनऊ	बेगम हजरत महल	कैम्पबेल
बरेली	खान बहादुर खान	कैम्पबेल

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

विद्रोह के केन्द्र	नेता	सेनापति
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	हयू रोज
बिहार	बाबू कुँवर सिंह	विसेंट आयर

विद्रोह का प्रसार

- विद्रोह का शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रसार देखा गया। इसके प्रमुख केन्द्र थे - दिल्ली लखनऊ, कानपुर, झाँसी, पटना बरेली इत्यादि
- प्रारम्भ में यह माना जाता था कि विद्रोह का प्रसार उत्तर भारत के कुछ राज्यों तक सीमित था लेकिन अब यह मान्यता प्रचलित है कि दक्षिण पश्चिमी एवं पूर्वी भारत में भी इसका प्रसार हुआ, हालांकि उत्तर भारत में तीव्रता अधिक थी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सामाजिक आधार

- विद्रोह में असंतुष्ट शासकों एवं जमींदारो की महत्वपूर्ण भूमिका थी और इन्होंने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया।
- बंगाल की सेना के अधिकांशतः सैनिक इस विद्रोह मे शामिल थे और विद्रोह को शक्ति प्रदान करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- बड़ी संख्या में किसानों, करीगरों, श्रमिको, महिलाओं इत्यादि की भी भागीदारी थी तथा भाग लेने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों संप्रदाय के लोग थे।

- सामाजिक आधार पर 1857 के विद्रोह को नागरिक विद्रोह एवं लोकप्रिय विद्रोह के रूप में जानते हैं।

नोट

- बंगाल एवं मद्रास के साथ-साथ सिख एवं गोरखा सैनिकों ने विद्रोह के दमन में अंग्रेजों का साथ दिया
- अधिकांशतः भारतीय शासकों ने भी अंग्रेजों का साथ दिया था जैसे - सिंधिया, भोपाल, पटियाला, कश्मीर, जोधपुर इत्यादि के शासक।
- विद्रोह के दौरान अवध के जमींदारो को जमींदारी वापस करने का आश्वासन दिया गया और वे विद्रोह से अलग हो गए।

असफलता के कारण

- अधिकांशतः भारतीय शासकों ने अंग्रेजों का साथ दिया।
- अधिकांशतः जमींदारों एवं सैनिकों ने भी अंग्रेजों का साथ दिया।
- विद्रोह की तीव्रता भारत के सभी क्षेत्रों में एक समान नहीं थी
- भविष्य को लेकर विद्रोही नेताओं के पास कोई योजना या कार्यक्रम नहीं था।
- केन्द्रीय नेतृत्व या शीर्ष नेतृत्व का कमजोर होना
- सैनिकों को किसी विद्रोह या क्रान्ति को संगठित करने का प्रशिक्षण नहीं था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- अंग्रेजों के पास बेहतर संसाधन थे- जैसे- आधुनिक हथियार, बेहतर संचार के साधन।
- अंग्रेजों के द्वारा भी साहस का परिचय दिया गया।

प्रश्न- 1857 के विद्रोह के कारणों का संक्षेप में बताएँ?

प्रश्न- 1857 के विद्रोह के लिए डलहौजी किस सीमा तक उत्तरदायी था?

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR